अंक–3 जून 2016, दिसंबर, 2016 ISSN:2321-4465 मूल्य: ₹ 50

1990

सिग्निफ़ायर ऑफ़ चेंज

(बदलाव का संकेतक)

साहित्य, संस्कृति और शोध की पत्रिका

अतिथि संपादक
मनहर चारण

विशेषांकः लोकतंत्र में मूल्य, शांति और शिक्षा

Scanned with CamScanner

शांति शिक्षा की व्यावहारिकता
डी.एन. प्रसाद 113
मूल्य आधारित शिक्षा
कन्हैया त्रिपाठी 117
लोकतंत्र के विकास में शांति और शिक्षा
भगीरथ प्रसाद 'वैष्णव', बिन्दु खण्डेलवाल, 124
प्रसाद की "कामायनी" में शान्ति और समरसता
डा. कल्पना मौर्य, 127
हमने अपनों को राजपाट करने का अवसर दिया है
डॉ. ममता पारीक, 131
शांति शिक्षा के बदलते आयाम
विकास शर्मा, रविन्द्र सिह 133
टेलीविजन धारावाहिक 'मैला आंचल'
में राजनीतिक युग चेतना और उसकी संप्रेषणीयता
उमेश कुमार पाठक, 141
केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
तथा राजकीय इण्टर कॉलेज के उच्चतर माध्यमिक
स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन
श्रवण कुमार शुक्ल
डॉ. अजय कुमार सिंह
लोकतंत्र में मूल्य और शांति शिक्षा 147
सतेन्द्र कुमार
शिक्षा द्वारा मूल्यों के विकास की प्राथमिकता तय हो 153
कुमारेन्द्र सिंह सेंगर
लोकतन्त्र में मूल्य व शान्ति शिक्षा 157
डॉ. सुरेश शर्मा
उषा शर्मा
भारतीय संस्कृति में मानव –मूल्य 161
संजय कुमार
लोकतन्त्र में स्वदेशी शिक्षा और शान्ति 165
रामावतार
मिताचार एक नैतिक मूल्य : अरस्तु के संदर्भ में 170
राहुल मनहर
शान्ति की शिक्षा से सामाजिक–समरसता का शंखनाद 174
जितेन्द्र कुमार लोढ़ा
178

Scanned with CamScanner

भारतीय संस्कृति में मानव–मूल्य

संजय कुमार

सहायक प्रोफेसर, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर

भारतीय संस्कृति सामासिक संस्कृति कही जाती है, इसमें सभी लोगों को समाहित करने की अपार क्षमता है। इसके भाव–विचार, रहन–सहन, गाम्भीर्य और सहजता स रंजित होकर लोग इसे स्वीकार ही नही करते बल्कि इसी के बन जाते हैं। वस्तुतः संस्कृति अपने देश की अन्तरात्मा होती है। इसके द्वारा उस देश और काल के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिसके आधार पर वह अपने सामाजिक या सामूहिक आदर्शों का निर्माण की हुई होती है। संस्कृति का प्रभाव हमें व्यक्तिगत या सामाजिक दायित्वों एवं पारस्परिक शिष्टाचारों के रूप में परिलक्षित होता है। संस्कृति से प्रभावित होकर ही व्यक्ति व्यक्तिगत, सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, कलात्मक एवं धार्मिक जैसे समस्त कार्यो को करने की प्रेरणा प्राप्त करता है। इसका प्रेरणाप्रद भाव ही मूल्य बन जाता है, मूल्य से हमारा यहाँ अभिप्राय उत्कट आदर्श से है। उत्कट आदर्श मानव जीवन में उस अग्निकण के समान है जिसका एक लव ही उसे प्रकाशित करने में पूर्ण सक्षम होती है।

भारतीय चिन्तन का मुख्य धेय मानव कल्याण है। वह किस प्रकार से अपने इस धेय को क्रियान्वित करे तो वह इस रूप में अध्यात्म का सहारा लेता है। अध्यात्म एक ऐसा तत्त्व है जिसके प्रति मानव मन शुभ में सहज ही प्रवृत्त हो जाता है। संसार की वस्तुस्थिति सभी के लिए कौतुहल का विषय रहा करती है। उस कौतुहल का शमन निःश्रेयसता के ज्ञान से हो जाता है। निःश्रेयस का अर्थ मोक्ष वह तभी संभव है जब मनुष्य के अन्दर सद्–असद् का विवेक हो तथा उदात्त मानवीय मूल्यों का आचरण हो। हमारे उदात्त मानव मूल्य प्राणिमात्र के प्रति दया, प्रेम, सुख की भावना है। स्वहित का त्याग परहित का ध्यान ही मानव मूल्य है, इसके बिना जीवन सही अर्थ में जीवन नहीं है। ईशावास्योपनिषद् का यही उद्घोष भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक मानव मूल्य का सूत्रपात करता है–

ऊँ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चजगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।[1]

अर्थात् जगत् में जो कुछ भी स्थावर जगम प्राणि समूह पदार्थ है यह सब कुछ ईश्वर द्वारा अच्छादनीय है। अतः उस ईश्वर के द्वारा प्रदान किये पदार्थों का मात्र जीवन निर्वाह के लिए भोग करो, किसी के भी धन की लालच मत करो। इस मूल्य शिक्षा की संकल्पना हमारे प्राचीन महर्षियों के द्वारा दी

Scanned with CamScanner